

हल्दू वृक्ष के वानस्पतिक प्रवर्धन की विषिष्ट तकनीक विकसित

पंतनगर। 21 जून, 2010। कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर के वैज्ञानिकों ने विलुप्ति के कगार पर खड़े हल्दू प्रजाति के वृक्षों को बचाने की दिशा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित परियोजना के अंतर्गत वैज्ञानिकों ने अपने देश में पहली बार कायिक प्रवर्धन (बीज के अतिरिक्त पौधे के अन्य भागों से पौध तैयार करने की विधि) के द्वारा हल्दू के पौध तैयार करने की नयी विषिष्ट तकनीकी विकसित की है।

कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र के संयुक्त निदेशक, डा. सलिल तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया कि हल्दू (*एडिना कार्डिफोलिया*) रूबीएसी कुल का महत्वपूर्ण पर्णपाती वृक्ष है जो 40 मीटर तक की ऊँचाई एवं 1 मीटर व्यास वाला होता है। इस वृक्ष से कीमती इमारती लकड़ी प्राप्त होती है जिससे दरवाजे, खिड़की, फर्नीचर बनाने के साथ-साथ उच्च गुणवत्तायुक्त नमीरोधी प्लाईवुड भी बनाया जाता है। सागौन एवं शाल वृक्षों से मिलता-जुलता यह वृक्ष पहले देश के पर्णपाती जंगलों में बहुतायत में पाया जाता था। ईंधन एवं चारे के रूप में स्थानीय लोगों द्वारा गहन रूप से प्रयोग करने के कारण इनकी संख्या कम होती गयी। उन्होंने बताया कि इस वृक्ष के बीज अति सूक्ष्म होने तथा जमाव के उपरान्त बचे नाजुक पौधे पानी के बहाव में बहकर दूर चले जाते हैं जिससे पौधे बहुत कम संख्या में स्थापित हो पाते हैं। इस कारण हल्दू के बीजों का जमाव एवं जीविता बहुत कम होती है। इसके साथ ही जंगली जानवरों द्वारा चरने और नयी पौध को नष्ट कर देने के कारण इनकी संख्या बहुत कम रह गयी है। दुर्भाग्य से इस बहुपयोगी जंगली वृक्ष प्रजाति के प्रवर्धन करने और बगानों में लगाने के प्रयास बहुत कम किये गये हैं। अगर यही स्थिति जारी रही तो निकट भविष्य में इस महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजाति के विलुप्त हो जाने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि नैनीताल जनपद के प्रमुख व्यावसायिक नगर हल्द्वानी का नाम इसी हल्दू वृक्ष के नाम पर ही रखा गया है।

कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र के सहायक निदेशक, डा. राजेश कौशल ने बताया कि इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए केन्द्र के वैज्ञानिकों ने कायिक प्रवर्धन हेतु पिछले कई वर्षों से शोध करने के उपरान्त मृदु काष्ठीय टहनियों से नयी पौध तैयार करने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने बताया कि सख्त टहनियों से पौध तैयार करने में कोई सफलता नहीं मिली जबकि कोपिस/एपीकार्मिक टहनियों के मोनो नोडल मृदु काष्ठ की कटिंग को आईबीए घोल से उपचारित करने के बाद हल्दू के नये पौध बड़ी संख्या में तैयार किये गये और इस प्रयास में 60-75 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त हुई। वनों में लगाने हेतु हल्दू की क्लोनिंग, बड़े पैमाने पर पौध तैयार करने और संरक्षण की दिशा में वैज्ञानिकों द्वारा किया गया यह प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है।



कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र में नयी तकनीकी से तैयार किये गये हल्दू के पौधे



2. हल्दू का पूर्ण विकसित वृक्ष